शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

भक्ति और पुरुषार्थ

विनोबा

वासना का अंत करने के लिए पूर्ण शक्ति लगानी पड़ती है। यह साधारण कार्य नहीं है। महा कठिन कार्य है। इसी से इसे परम पुरुषार्थ कहते हैं। यदि इंद्रियनिग्रह यानी बाह्य इंद्रियनिग्रह से वासना का अंत नहीं होता हैए अर्थात निरोध शक्ति इस कार्य को करने में असमर्थ हैंए तो ज्ञान-शक्ति भी पूर्ण रूप से इस कार्य में लगनी चाहिए। परंतु हो सकता है कि संपूर्ण निरोध-शक्ति और ज्ञान-शक्ति लगा देने पर भी सिद्धि न मिलेए दोनों से इंद्रिया बलिष्ठ साबित हों और हमें कामयाबी न मिले। यहां निराशा का आभास होता है। इसलिए तीसरी अमोघ शक्ति बतायी है भक्ति! निरोध-शक्ति और ज्ञान-शक्ति का पूर्ण उपयोग करो और मेरी शरण आओ। वासनाक्षय के प्रयास में जब निरोध-शक्ति और ज्ञान-शक्ति कम पड़ती हैए तब भक्ति का उपयोग होता है। निरोध-शक्ति और ज्ञान-शक्ति के उपयोग के बाद भी द्वंद्व-मोहश दूर नहीं होताए तब भक्ति काम आती है।

भारत में जो भक्तिमार्ग चला, वह दरअसल भक्तिमार्ग नहीं, साधारण श्रद्धा है। वह भी अच्छी है। उतनी भी न होती तो हम जानवर बनते। साधारण श्रद्धा सबदूर है, यह भगवान की कृपा है। लेकिन वह भक्ति नहीं है। भक्ति तो जहां पुरुषार्थ की पराकाष्ठा होती है, वहां पूरकरूप होती है। भगवान पुरुष के प्रयत्न से आएगा। पुरुष का पूरा प्रयत्न होने के बाद जहां और मदद की जरूरत होगी, वहां आयेगा।

जब तक मनुष्य को यह भान नहीं होता कि मैं सबसे नीच हूं, तब तक वह भगवान के द्वारा उद्धार की आशा नहीं कर सकता। मनुष्य को कभी-कभी अपने दोषों का भान होता है और उसके ध्यान में आता है कि हम कुछ पतित हैं। फिर भी उसके मन में ऐसा अहम् रहता है कि दूसरे बहुत-से लोग ज्यादा पतित हैं, मैं उनसे जरा बेहतर हूं। भगवान ऐसे मनुष्य को कहेगा, कि तुम्हारे मुंह से ही फैसला हो गया है, तब तुम्हें मेरी मदद की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी उन लोगों को है।

सूरदास ने गाया है **मो सम कौन कुटिल खल कामी।** वह उन्होंने कोई काव्य नहीं लिखा, उनके मन में वैसा भाव ही था। सूरदास जैसे महान भक्त के मन में यह सहज प्रश्न होता है। यह अनुभव यदि अंदर से होता है कि मैं सब लोगों से अधिक पतित हूंए और प्रश्न उठाता है तो उसका उत्तर हां में है। जिसका चित्त अधिक शुद्ध होता है, उसे अपना अल्प दोष भी बड़ा तकलीफ देता है। इसलिए वह आत्मनिंदा करता है। आंख अत्यंत निर्मल वस्तु हैए इसलिए धूल का एक छोटा-सा कण भी आंख को बहुत तकलीफ देता है। वही कण यदि गले से पेट में चला जाए तो उतनी वेदना नहीं होगी, क्योंकि पेट आंख जैसा शुद्ध नहीं है। भक्त का चित्त आंख के समान स्वच्छ निर्मल होता हैए इसलिए अल्प दोष भी उसे बहुत ज्यादा तकलीफ देता है। और इसलिए वह अल्प दोष अल्प नहीं रहता। यह आध्यात्मिक परीक्षण का रास्ता है।

(अध्यात्म और आश्रम : विनोबा साहित्य खंड 14)